GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

छायावाद से प्रगतिवाद तक हिंदी पत्रकारिता का बदलता स्वरूप: एक आलोचनात्मक अध्ययन

डॉ .शुभा अग्रवाल
एसोसिएट प्रोफेसर (हिंदी विभाग)
जागरण कॉलेज ऑफ़ आर्ट साइंस एंड कॉमर्स, कानपुर
Email ID :- agarwalshubha1981@gmail.com

सारांश (Abstract)

हिंदी पत्रकारिता भारतीय समाज, संस्कृति, राजनीति और साहित्यिक चेतना के विकास का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम रही है। हिंदी साहित्य के इतिहास में छायावाद और प्रगतिवाद दो ऐसे साहित्यिक आंदोलन हैं जिन्होंने न केवल काव्य और गद्य की दिशा को परिवर्तित किया, बल्कि पत्रकारिता की भाषा, विषय-वस्तु, दृष्टिकोण और सामाजिक भूमिका को भी व्यापक रूप से प्रभावित किया। प्रस्तुत शोध पत्र में छायावाद से प्रगतिवाद तक हिंदी पत्रकारिता के स्वरूप में आए परिवर्तन का आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है। छायावादी युग की पत्रकारिता में भावुकता, राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक पुनर्जागरण, आत्मानुभूति तथा आदर्शवाद की प्रधानता दिखाई देती है। इस काल की पत्र-पत्रिकाएँ साहित्यिक अभिरुचि, भाषा-सौंदर्य और सांस्कृतिक अस्मिता को प्रमुखता प्रदान करती थीं। दूसरी ओर, प्रगतिवादी युग में पत्रकारिता अधिक यथार्थवादी, जनोन्मुखी, वैज्ञानिक दृष्टि संपन्न और सामाजिक संघर्षों से जुड़ी हुई दिखाई देती है। वर्ग-संघर्ष, श्रमिक जीवन, स्त्री प्रश्न, किसान आंदोलन, औपनिवेशिक शोषण तथा सामाजिक विषमता जैसे विषय पत्रकारिता के केंद्र में आ गए। इस शोध पत्र में 'सरस्वती', 'मतवाला', 'चाँद', 'हंस', 'विशाल भारत' आदि पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हिंदी पत्रकारिता के वैचारिक और शैलीगत परिवर्तन का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि हिंदी पत्रकारिता ने साहित्यिक आंदोलनों के साथ स्वयं को निरंतर परिवर्तित किया तथा समाज परिवर्तन के एक सशक्त उपकरण के रूप में अपनी भूमिका निभाई। यह शोध पत्र हिंदी पत्रकारिता के विकासक्रम को साहित्यिक चेतना के संदर्भ में समझने का एक प्रयास है।

बीज शब्द- हिंदी पत्रकारिता, साहित्य, भारतीय समाज, पत्र- पत्रकारिता, साहित्यिक पत्रकारिता

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

प्रस्तावना

हिंदी पत्रकारिता भारतीय समाज के वैचारिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक विकास की एक महत्त्वपूर्ण धारा रही है। पत्रकारिता केवल समाचारों के संप्रेषण का माध्यम नहीं रही, बल्कि उसने समाज में चेतना, जागरण और परिवर्तन का कार्य भी किया। हिंदी पत्रकारिता के इतिहास का अध्ययन करते समय यह स्पष्ट दिखाई देता है कि साहित्यिक आंदोलनों और पत्रकारिता के स्वरूप के बीच गहरा संबंध रहा है। हिंदी साहित्य के दो प्रमुख साहित्यिक आंदोलन—छायावाद और प्रगतिवाद—ने हिंदी पत्रकारिता को गहराई से प्रभावित किया।

छायावाद का काल लगभग 1918 से 1936 तक माना जाता है। यह काल भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन, राष्ट्रीय जागरण और सांस्कृतिक पुनरुत्थान का काल था। छायावादी साहित्य में व्यक्तिवाद, प्रकृति-प्रेम, आध्यात्मिकता, रहस्यवाद और भावुकता की प्रधानता थी। इस युग की पत्रकारिता में भी साहित्यिकता, भाषा की कलात्मकता और सांस्कृतिक चेतना प्रमुख रूप से दिखाई देती है। 'सरस्वती', 'माधुरी', 'मतवाला' और 'चाँद' जैसी पत्रिकाओं ने हिंदी समाज में साहित्यिक अभिरुचि विकसित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इसके बाद प्रगतिवाद का उदय हुआ, जिसने साहित्य और पत्रकारिता दोनों को नई दिशा प्रदान की। 1936 में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना के साथ हिंदी साहित्य और पत्रकारिता में यथार्थवादी दृष्टिकोण को बल मिला। प्रगतिवादी पत्रकारिता ने समाज के शोषित वर्गों, किसानों, मजदूरों और स्त्रियों की समस्याओं को केंद्र में रखा। यह पत्रकारिता केवल साहित्यिक सौंदर्य तक सीमित नहीं रही, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बन गई।

प्रस्तुत शोध पत्र में छायावाद से प्रगतिवाद तक हिंदी पत्रकारिता के बदलते स्वरूप का आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है। इसमें पत्रकारिता के वैचारिक, भाषिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पक्षों का विश्लेषण किया गया है। साथ ही प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं और संपादकों की भूमिका का भी मूल्यांकन किया गया है।

शोध का उद्देश्य

1. छायावादी युग की हिंदी पत्रकारिता की प्रमुख विशेषताओं का अध्ययन करना।
2. प्रगतिवादी युग की पत्रकारिता के वैचारिक स्वरूप का विश्लेषण करना।
3. हिंदी पत्रकारिता में आए भाषिक और शैलीगत परिवर्तनों का अध्ययन करना।
4. साहित्यिक आंदोलनों और पत्रकारिता के पारस्परिक संबंधों को स्पष्ट करना।
5. हिंदी पत्रकारिता के सामाजिक दायित्व और जनोन्मुखी स्वरूप का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

शोध की पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। अध्ययन के लिए हिंदी साहित्य और पत्रकारिता से संबंधित विभिन्न पुस्तकों, शोध पत्रों, पत्र-पत्रिकाओं और आलोचनात्मक ग्रंथों का उपयोग किया गया है। साथ ही छायावादी और प्रगतिवादी युग की प्रमुख पत्रिकाओं का तुलनात्मक अध्ययन भी किया गया है।

हिंदी पत्रकारिता का प्रारंभिक विकास

हिंदी पत्रकारिता का इतिहास उन्नीसवीं शताब्दी से प्रारंभ होता है। 30 मई 1826 को पंडित जुगल किशोर शुक्ल द्वारा प्रकाशित 'उदंत मार्तंड' हिंदी का प्रथम समाचार पत्र माना जाता है। प्रारंभिक हिंदी पत्रकारिता का उद्देश्य सामाजिक जागरण, राष्ट्रीय चेतना और शिक्षा का प्रसार था। भारतेन्दु हरिश्चंद्र के समय तक आते-आते हिंदी पत्रकारिता साहित्य और समाज सुधार का प्रमुख माध्यम बन चुकी थी।

भारतेन्दु युग की पत्रकारिता में राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक सुधार और आधुनिकता के तत्व दिखाई देते हैं। इसके बाद द्विवेदी युग में पत्रकारिता ने भाषा-शुद्धि, नैतिकता और राष्ट्रीयता को प्रमुखता दी। महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा संपादित 'सरस्वती' पत्रिका ने हिंदी भाषा और साहित्य को नई दिशा प्रदान की। यही पृष्ठभूमि आगे चलकर छायावादी पत्रकारिता के विकास का आधार बनी।

छायावाद : अवधारणा और पृष्ठभूमि

छायावाद हिंदी साहित्य का एक महत्त्वपूर्ण काव्य आंदोलन है, जिसका उदय बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में हुआ। जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा इसके प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं। छायावादी साहित्य में व्यक्तिवाद, रहस्यवाद, प्रकृति-सौंदर्य, करुणा, आत्मानुभूति और भावुकता की प्रधानता थी।

छायावाद का उदय केवल साहित्यिक घटना नहीं था; यह भारतीय समाज की सांस्कृतिक और मानसिक स्थितियों का परिणाम था। अंग्रेजी शासन, राष्ट्रीय आंदोलन, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और पश्चिमी शिक्षा के प्रभाव ने भारतीय समाज में नई चेतना उत्पन्न की। छायावादी साहित्य ने व्यक्ति के अंतर्मन और संवेदनाओं को अभिव्यक्ति दी।

इसी साहित्यिक चेतना का प्रभाव हिंदी पत्रकारिता पर भी पड़ा। पत्रकारिता में साहित्यिकता, भाषा की कलात्मकता और सांस्कृतिक गौरव के तत्व दिखाई देने लगे।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

छायावादी युग की हिंदी पत्रकारिता

1. साहित्यिक पत्रकारिता का उत्कर्ष

छायावादी युग में हिंदी पत्रकारिता मुख्यतः साहित्यिक स्वरूप ग्रहण करती दिखाई देती है। इस काल की पत्र-पत्रिकाएँ केवल समाचारों का माध्यम नहीं थीं, बल्कि साहित्यिक अभिरुचि और सांस्कृतिक चेतना का विकास करती थीं। 'सरस्वती', 'माधुरी', 'मतवाला', 'विशाल भारत', 'चाँद' आदि पत्रिकाओं ने हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इन पत्रिकाओं में कविता, कहानी, निबंध, आलोचना और सांस्कृतिक लेखों का प्रकाशन होता था। साहित्यिक पत्रकारिता ने हिंदी भाषा को परिष्कृत और कलात्मक रूप प्रदान किया।

2. राष्ट्रीय चेतना और पत्रकारिता

छायावादी युग भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का भी काल था। इसलिए इस समय की पत्रकारिता में राष्ट्रीय चेतना स्पष्ट दिखाई देती है। अंग्रेजी शासन के विरुद्ध प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से लेख प्रकाशित किए जाते थे। पत्रकारिता ने राष्ट्रीय आंदोलन को वैचारिक आधार प्रदान किया।

माखनलाल चतुर्वेदी जैसे पत्रकारों ने पत्रकारिता को स्वतंत्रता संघर्ष का हथियार बनाया। 'कर्मवीर' और 'प्रभा' जैसी पत्रिकाओं ने राष्ट्रीय भावना को जन-जन तक पहुँचाया।

3. भाषा और शैली

छायावादी पत्रकारिता की भाषा अत्यंत साहित्यिक, संस्कृतनिष्ठ और अलंकारपूर्ण थी। भाषा में भावुकता और कलात्मकता का समावेश था। लेखन शैली में गंभीरता, आदर्शवाद और काव्यात्मकता दिखाई देती थी।

इस काल की पत्रकारिता में भाषा-सौंदर्य को अत्यधिक महत्त्व दिया गया। पत्रकार केवल सूचना देने तक सीमित नहीं थे, बल्कि वे पाठकों के भाव-जगत को भी प्रभावित करते थे।

4. सांस्कृतिक पुनर्जागरण

छायावादी पत्रकारिता भारतीय संस्कृति, इतिहास और परंपराओं के पुनर्मूल्यांकन की ओर उन्मुख थी। भारतीयता और सांस्कृतिक गौरव को स्थापित करने का प्रयास किया गया। पत्र-पत्रिकाओं में भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन और इतिहास से संबंधित लेख प्रकाशित होते थे।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

5. स्त्री चेतना का प्रारंभिक स्वर

महादेवी वर्मा जैसी साहित्यकारों ने पत्रकारिता के माध्यम से स्त्री शिक्षा, स्त्री स्वतंत्रता और स्त्री चेतना को अभिव्यक्ति दी। यद्यपि यह स्वर प्रारंभिक था, फिर भी हिंदी पत्रकारिता में स्त्री प्रश्नों की उपस्थिति महत्त्वपूर्ण मानी जाती है।

छायावादी पत्रकारिता की प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ

सरस्वती

'सरस्वती' हिंदी की अत्यंत महत्त्वपूर्ण साहित्यिक पत्रिका थी। महावीर प्रसाद द्विवेदी के संपादन में इस पत्रिका ने हिंदी साहित्य और पत्रकारिता को नई दिशा प्रदान की। इस पत्रिका ने भाषा-शुद्धि, राष्ट्रीय चेतना और साहित्यिक संस्कृति के विकास में उल्लेखनीय योगदान दिया।

माधुरी

'माधुरी' पत्रिका ने साहित्यिक पत्रकारिता को लोकप्रिय बनाया। इसमें कविता, कहानी और आलोचना के साथ-साथ सामाजिक और सांस्कृतिक विषयों पर भी लेख प्रकाशित होते थे।

मतवाला

'मतवाला' पत्रिका अपने विद्रोही तेवर और नवीन दृष्टिकोण के लिए प्रसिद्ध थी। इस पत्रिका ने साहित्यिक रूढ़ियों का विरोध किया और स्वतंत्र चिंतन को प्रोत्साहित किया। निराला का इससे विशेष संबंध था।

चाँद

'चाँद' पत्रिका ने राष्ट्रीय आंदोलन और सामाजिक मुद्दों को प्रमुखता दी। इसके विशेषांक अत्यंत लोकप्रिय हुए। 'फाँसी अंक' ने क्रांतिकारियों की भावना को जनसामान्य तक पहुँचाने में बड़ी भूमिका निभाई।

विशाल भारत

'विशाल भारत' ने साहित्य, राजनीति और समाज को एक साथ जोड़ने का कार्य किया। यह पत्रिका राष्ट्रीय चेतना और साहित्यिक गंभीरता का समन्वय प्रस्तुत करती थी।

छायावादी पत्रकारिता की सीमाएँ

यद्यपि छायावादी पत्रकारिता ने हिंदी भाषा और साहित्य को समृद्ध किया, फिर भी इसकी कुछ सीमाएँ थीं।

1. इसकी भाषा अत्यधिक संस्कृतनिष्ठ होने के कारण सामान्य पाठकों के लिए कठिन हो जाती थी।
2. पत्रकारिता में यथार्थ की अपेक्षा आदर्शवाद और भावुकता अधिक थी।
3. किसान, मजदूर और निम्न वर्ग की समस्याओं को अपेक्षित महत्त्व नहीं मिला।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

4. सामाजिक विषमताओं का गहन विश्लेषण अपेक्षाकृत कम दिखाई देता है।

इन सीमाओं के कारण हिंदी पत्रकारिता में एक नए दृष्टिकोण की आवश्यकता महसूस की जाने लगी, जिसने आगे चलकर प्रगतिवाद को जन्म दिया।

प्रगतिवाद : अवधारणा और पृष्ठभूमि

प्रगतिवाद हिंदी साहित्य का वह आंदोलन है जिसने साहित्य को सामाजिक यथार्थ और जनजीवन से जोड़ने का प्रयास किया। 1936 में लखनऊ में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना के साथ हिंदी साहित्य में प्रगतिवादी चेतना का संगठित रूप सामने आया। प्रेमचंद ने अपने अध्यक्षीय भाषण में साहित्य को समाज परिवर्तन का माध्यम बताया।

प्रगतिवाद पर मार्क्सवादी विचारधारा का प्रभाव था। इसमें वर्ग-संघर्ष, आर्थिक विषमता, शोषण और सामाजिक अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाई गई। साहित्य और पत्रकारिता दोनों में यथार्थवादी दृष्टिकोण को महत्त्व मिला।

प्रगतिवादी पत्रकारिता ने समाज के उपेक्षित वर्गों को अभिव्यक्ति दी और पत्रकारिता को जनसरोकारों से जोड़ा।

प्रगतिवादी हिंदी पत्रकारिता का स्वरूप

1. जनोन्मुखी पत्रकारिता

प्रगतिवादी पत्रकारिता का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष उसका जनोन्मुखी स्वरूप था। पत्रकारिता अब केवल साहित्यिक अभिजात वर्ग तक सीमित नहीं रही। किसानों, मजदूरों, स्त्रियों और दलितों की समस्याएँ पत्रकारिता के केंद्र में आ गईं।

पत्र-पत्रिकाओं में सामाजिक अन्याय, आर्थिक विषमता और राजनीतिक शोषण के विरुद्ध लेख प्रकाशित होने लगे। पत्रकारिता समाज परिवर्तन का माध्यम बन गई।

2. यथार्थवाद की प्रधानता

छायावादी पत्रकारिता की भावुकता और आदर्शवाद के स्थान पर प्रगतिवादी पत्रकारिता में यथार्थवाद को प्रमुखता मिली। अब पत्रकारिता में जीवन की कठोर वास्तविकताओं का चित्रण होने लगा।

गरीबी, बेरोजगारी, अकाल, मजदूर आंदोलन और किसान संघर्ष जैसे विषय प्रमुखता से उठाए गए। पत्रकारिता ने समाज की वास्तविक समस्याओं को सामने लाने का कार्य किया।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

3. भाषा का सरलीकरण

प्रगतिवादी पत्रकारिता की भाषा अपेक्षाकृत सरल, सहज और जनसामान्य के निकट थी। संस्कृतनिष्ठ भाषा के स्थान पर बोलचाल की भाषा और जनभाषा का प्रयोग बढ़ा।

पत्रकारिता का उद्देश्य अधिकाधिक लोगों तक पहुँचना था, इसलिए भाषा को संप्रेषणीय बनाया गया।

4. वैचारिक प्रतिबद्धता

प्रगतिवादी पत्रकारिता वैचारिक रूप से प्रतिबद्ध पत्रकारिता थी। इसमें समाजवाद, समानता और मानवतावाद के विचारों को महत्त्व दिया गया। पत्रकारिता का उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन लाना भी था।

5. स्त्री और दलित विमर्श

प्रगतिवादी पत्रकारिता में स्त्री और दलित प्रश्नों को अधिक गंभीरता से उठाया गया। स्त्रियों की शिक्षा, अधिकार और सामाजिक स्थिति पर लेख प्रकाशित होने लगे। साथ ही दलितों के शोषण और सामाजिक भेदभाव के विरुद्ध आवाज उठाई गई।

प्रगतिवादी पत्रकारिता की प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ

हंस

प्रेमचंद द्वारा संपादित 'हंस' हिंदी की अत्यंत महत्त्वपूर्ण प्रगतिशील पत्रिका थी। इस पत्रिका ने सामाजिक यथार्थ और जनसमस्याओं को प्रमुखता दी। 'हंस' ने साहित्य और समाज के बीच संबंध स्थापित करने में बड़ी भूमिका निभाई।

जागरण

'जागरण' पत्रिका ने सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों को प्रमुखता दी। इसमें स्वतंत्रता आंदोलन, किसान आंदोलन और श्रमिक समस्याओं से संबंधित लेख प्रकाशित होते थे।

नया साहित्य

'नया साहित्य' ने प्रगतिवादी विचारधारा को व्यापक रूप से प्रचारित किया। इसमें सामाजिक यथार्थ और वर्ग-संघर्ष से संबंधित साहित्य प्रकाशित होता था।

जनयुग

'जनयुग' जैसी पत्रिकाओं ने पत्रकारिता को जनसंघर्षों से जोड़ा। मजदूर और किसान आंदोलनों को प्रमुखता प्रदान की गई।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

छायावाद और प्रगतिवाद : पत्रकारिता का तुलनात्मक अध्ययन

हिंदी साहित्य के विकासक्रम में छायावाद और प्रगतिवाद दो ऐसी प्रमुख साहित्यिक धाराएँ हैं, जिन्होंने केवल काव्य और साहित्य को ही नहीं, बल्कि हिंदी पत्रकारिता की विचारधारा, भाषा-शैली और सामाजिक दृष्टिकोण को भी व्यापक रूप से प्रभावित किया। छायावाद का काल लगभग 1918 से 1936 तक माना जाता है। इस युग की पत्रकारिता में भावुकता, आत्मानुभूति, प्रकृति-सौंदर्य, रहस्यवाद और मानवीय संवेदनाओं का विशेष स्थान था। छायावादी पत्रकारिता मुख्यतः व्यक्ति के आंतरिक जीवन, उसकी अनुभूतियों तथा सांस्कृतिक चेतना को अभिव्यक्त करने का माध्यम बनी। इस दौर की पत्र-पत्रिकाओं में भाषा अत्यंत संस्कृतनिष्ठ, कोमल, अलंकारपूर्ण और साहित्यिक दिखाई देती है। पत्रकारिता में आदर्शवाद, राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक पुनर्जागरण की भावना विद्यमान थी। उस समय की कई प्रतिष्ठित पत्रिकाओं ने साहित्यिक मूल्यों को प्राथमिकता देते हुए समाज में नैतिकता और सौंदर्यबोध को विकसित करने का कार्य किया। छायावादी पत्रकारिता का उद्देश्य केवल समाचार देना नहीं था, बल्कि पाठकों के भाव-जगत को परिष्कृत करना और उनमें सांस्कृतिक चेतना उत्पन्न करना भी था। इसके विपरीत, प्रगतिवाद का उदय 1936 के आसपास हुआ, जब भारतीय समाज राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक परिवर्तनों के दौर से गुजर रहा था। औपनिवेशिक शोषण, गरीबी, किसान-मजदूरों की समस्याएँ, सामाजिक असमानता तथा वर्ग-संघर्ष जैसी स्थितियों ने साहित्य और पत्रकारिता को नई दिशा प्रदान की। प्रगतिवादी पत्रकारिता ने जीवन के यथार्थ को केंद्र में रखा और समाज के शोषित तथा वंचित वर्गों की आवाज़ बनने का प्रयास किया। इसकी भाषा अपेक्षाकृत सरल, स्पष्ट, व्यावहारिक और जनसामान्य की समझ के अनुकूल थी। जहाँ छायावादी पत्रकारिता भावनात्मक और कलात्मक अभिव्यक्ति को महत्व देती थी, वहीं प्रगतिवादी पत्रकारिता सामाजिक परिवर्तन, जनचेतना और क्रांतिकारी विचारधारा को प्राथमिकता देती थी। प्रगतिवाद से प्रभावित पत्र-पत्रिकाओं में सामाजिक अन्याय, आर्थिक विषमता, राजनीतिक संघर्ष और राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन से जुड़े विषय प्रमुखता से प्रकाशित होने लगे। इस युग की पत्रकारिता में साहित्य और समाज के संबंध को अधिक व्यावहारिक दृष्टि से देखा गया। तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो छायावाद और प्रगतिवाद दोनों ही हिंदी पत्रकारिता के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण रहे, किंतु उनकी दृष्टि और उद्देश्य अलग-अलग थे। छायावाद ने पत्रकारिता को साहित्यिक गरिमा, सांस्कृतिक चेतना और भावात्मक सौंदर्य प्रदान किया, जबकि प्रगतिवाद ने उसे सामाजिक यथार्थ, जनपक्षधरता और परिवर्तनकारी चेतना से जोड़ा। एक ओर छायावादी पत्रकारिता व्यक्ति के अंतर्मन और सौंदर्यबोध की अभिव्यक्ति थी, तो दूसरी ओर प्रगतिवादी पत्रकारिता समाज के संघर्षशील जीवन और सामूहिक चेतना की प्रतिनिधि बनी। इस प्रकार, दोनों धाराओं ने

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

अपने-अपने स्तर पर हिंदी पत्रकारिता को समृद्ध किया तथा उसे साहित्यिक और सामाजिक दोनों दृष्टियों से नई दिशा प्रदान की।

हिंदी पत्रकारिता के प्रमुख आधार स्तंभ

महावीर प्रसाद द्विवेदी

महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिंदी पत्रकारिता को अनुशासन, भाषा-शुद्धि और राष्ट्रीय चेतना प्रदान की। 'सरस्वती' के माध्यम से उन्होंने हिंदी साहित्य और पत्रकारिता को नई दिशा दी।

माखनलाल चतुर्वेदी

माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता और स्वतंत्रता आंदोलन दोनों के महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व थे। उनकी पत्रकारिता में राष्ट्रीय चेतना और क्रांतिकारी भावना दिखाई देती है।

प्रेमचंद

प्रेमचंद ने पत्रकारिता को सामाजिक यथार्थ से जोड़ा। 'हंस' और 'जागरण' के माध्यम से उन्होंने किसानों, मजदूरों और शोषित वर्गों की समस्याओं को अभिव्यक्ति दी।

निराला

निराला ने पत्रकारिता में स्वतंत्र चिंतन और विद्रोही चेतना को स्थान दिया। 'मतवाला' के माध्यम से उन्होंने साहित्यिक रूढ़ियों का विरोध किया।

गणेश शंकर विद्यार्थी

गणेश शंकर विद्यार्थी हिंदी पत्रकारिता के निर्भीक और जनोन्मुखी पत्रकार थे। 'प्रताप' के माध्यम से उन्होंने सामाजिक अन्याय और औपनिवेशिक शोषण के विरुद्ध आवाज उठाई।

स्वतंत्रता आंदोलन और हिंदी पत्रकारिता

छायावाद और प्रगतिवाद दोनों ही काल भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े हुए थे। पत्रकारिता ने राष्ट्रीय आंदोलन को वैचारिक शक्ति प्रदान की। अंग्रेजी शासन की दमनकारी नीतियों के विरुद्ध पत्रकारों ने निर्भीक लेखन किया।

छायावादी पत्रकारिता ने राष्ट्रीय भावना और सांस्कृतिक गौरव को बल दिया, जबकि प्रगतिवादी पत्रकारिता ने स्वतंत्रता आंदोलन को सामाजिक और आर्थिक न्याय के प्रश्नों से जोड़ा।

पत्रकारिता स्वतंत्रता संघर्ष का एक महत्त्वपूर्ण हथियार बन गई। कई पत्र-पत्रिकाएँ अंग्रेजी शासन द्वारा प्रतिबंधित भी की गईं। फिर भी पत्रकारों ने अपने दायित्व का निर्वाह किया।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

हिंदी पत्रकारिता और सामाजिक परिवर्तन

प्रगतिवादी पत्रकारिता ने हिंदी समाज में सामाजिक चेतना का विस्तार किया। पत्रकारिता ने जातिवाद, लैंगिक असमानता, सामंती शोषण और आर्थिक विषमता जैसे मुद्दों को उठाया।

पत्र-पत्रिकाओं ने समाज सुधार आंदोलनों को समर्थन दिया। शिक्षा, स्त्री अधिकार और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रसार में पत्रकारिता की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

इस प्रकार हिंदी पत्रकारिता केवल साहित्यिक माध्यम नहीं रही, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की सक्रिय शक्ति बन गई।

पत्रकारिता में भाषा और शैली का परिवर्तन

छायावाद से प्रगतिवाद तक हिंदी पत्रकारिता की भाषा और शैली में व्यापक परिवर्तन हुआ।

छायावादी भाषा की विशेषताएँ

संस्कृतनिष्ठ शब्दावली

अलंकारिकता और काव्यात्मकता

भावुकता और सौंदर्यबोध

गंभीर और साहित्यिक शैली

प्रगतिवादी भाषा की विशेषताएँ

सरल और बोलचाल की भाषा

स्पष्टता और संप्रेषणीयता

जनसामान्य के निकट शैली

यथार्थवादी अभिव्यक्ति

यह परिवर्तन हिंदी पत्रकारिता के लोकतांत्रिक विकास का संकेत था। पत्रकारिता अब व्यापक समाज से संवाद स्थापित करने लगी।

पत्रकारिता और वैचारिक संघर्ष

छायावाद और प्रगतिवाद के बीच केवल साहित्यिक अंतर नहीं था, बल्कि वैचारिक संघर्ष भी था। छायावादी पत्रकारिता व्यक्ति की संवेदनाओं और सांस्कृतिक चेतना पर केंद्रित थी, जबकि प्रगतिवादी पत्रकारिता सामाजिक संरचनाओं और आर्थिक विषमता पर प्रश्न उठाती थी।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

प्रगतिवादियों ने छायावाद को पलायनवादी और अत्यधिक भावुक बताया। दूसरी ओर, छायावादी विचारधारा के समर्थकों ने प्रगतिवादी साहित्य को अत्यधिक राजनीतिक और प्रचारवादी कहा।

यह वैचारिक संघर्ष हिंदी पत्रकारिता में भी दिखाई देता है। विभिन्न पत्र-पत्रिकाएँ अलग-अलग विचारधाराओं का प्रतिनिधित्व करती थीं। फिर भी इस संघर्ष ने हिंदी पत्रकारिता को वैचारिक रूप से समृद्ध किया।

हिंदी पत्रकारिता में स्त्री विमर्श

छायावादी युग में स्त्री विमर्श मुख्यतः संवेदनात्मक और नैतिक दृष्टिकोण तक सीमित था। महादेवी वर्मा ने स्त्री जीवन की पीड़ा और संवेदनाओं को अभिव्यक्ति दी।

प्रगतिवादी पत्रकारिता में स्त्री प्रश्नों को सामाजिक और आर्थिक संदर्भों में देखा गया। स्त्रियों की शिक्षा, रोजगार, समान अधिकार और सामाजिक स्वतंत्रता पर गंभीर विमर्श प्रारंभ हुआ।

पत्र-पत्रिकाओं ने स्त्री चेतना के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह हिंदी पत्रकारिता के सामाजिक विस्तार का संकेत था।

हिंदी पत्रकारिता और किसान-मजदूर प्रश्न

प्रगतिवादी पत्रकारिता का एक प्रमुख योगदान किसान और मजदूर वर्ग की समस्याओं को अभिव्यक्ति देना था। पत्र-पत्रिकाओं में किसानों की बदहाल स्थिति, जमींदारी शोषण और श्रमिक आंदोलनों से संबंधित लेख प्रकाशित होते थे।

पत्रकारिता ने आर्थिक विषमता और पूँजीवादी शोषण के विरुद्ध जनमत तैयार किया। यह पत्रकारिता समाज के हाशिए पर स्थित वर्गों की आवाज बन गई।

आलोचनात्मक मूल्यांकन

छायावाद से प्रगतिवाद तक हिंदी पत्रकारिता का विकास भारतीय समाज की बदलती परिस्थितियों का दर्पण है। छायावादी पत्रकारिता ने हिंदी भाषा और साहित्य को सौंदर्य, संवेदना और सांस्कृतिक चेतना प्रदान की। इसने राष्ट्रीय आंदोलन को वैचारिक आधार दिया तथा साहित्यिक पत्रकारिता की परंपरा को समृद्ध किया।

दूसरी ओर, प्रगतिवादी पत्रकारिता ने पत्रकारिता को जनजीवन और सामाजिक यथार्थ से जोड़ा। इसने शोषित वर्गों की समस्याओं को अभिव्यक्ति दी और पत्रकारिता को सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनाया।

फिर भी दोनों धाराओं की अपनी सीमाएँ थीं। छायावादी पत्रकारिता में यथार्थ का अभाव दिखाई देता है, जबकि प्रगतिवादी पत्रकारिता कभी-कभी अत्यधिक वैचारिक और राजनीतिक हो जाती है। इसके बावजूद दोनों धाराओं ने हिंदी पत्रकारिता के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

समकालीन संदर्भ में प्रासंगिकता

आज के समय में हिंदी पत्रकारिता अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है। बाजारीकरण, राजनीतिक दबाव, कॉरपोरेट नियंत्रण और डिजिटल मीडिया के प्रभाव ने पत्रकारिता के स्वरूप को बदल दिया है। ऐसे समय में छायावादी और प्रगतिवादी पत्रकारिता के मूल्य पुनः प्रासंगिक हो उठते हैं।

छायावादी पत्रकारिता हमें भाषा-सौंदर्य, सांस्कृतिक चेतना और साहित्यिक गरिमा का महत्व सिखाती है, जबकि प्रगतिवादी पत्रकारिता जनसरोकार, सामाजिक न्याय और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा का संदेश देती है। समकालीन हिंदी पत्रकारिता को इन दोनों परंपराओं से प्रेरणा लेकर संतुलित, जनोन्मुखी और नैतिक पत्रकारिता की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए।

छायावाद से प्रगतिवाद तक हिंदी पत्रकारिता का विकास भारतीय समाज, साहित्य और राजनीति के बदलते स्वरूप का प्रतिबिंब है। छायावादी पत्रकारिता ने हिंदी भाषा और साहित्य को संवेदनात्मक गहराई, सांस्कृतिक चेतना और साहित्यिक सौंदर्य प्रदान किया। वहीं प्रगतिवादी पत्रकारिता ने पत्रकारिता को सामाजिक यथार्थ, वर्ग-संघर्ष और जनसरोकारों से जोड़कर उसे अधिक व्यापक और प्रभावशाली बनाया।

यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि हिंदी पत्रकारिता केवल सूचना का माध्यम नहीं रही, बल्कि उसने भारतीय समाज में वैचारिक और सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को दिशा प्रदान की। साहित्यिक आंदोलनों के साथ पत्रकारिता का गहरा संबंध रहा है और दोनों ने एक-दूसरे को प्रभावित किया है।

छायावाद और प्रगतिवाद दोनों ही हिंदी पत्रकारिता की विकास यात्रा के महत्त्वपूर्ण चरण हैं। इन दोनों धाराओं ने हिंदी पत्रकारिता को वैचारिक, भाषिक और सामाजिक स्तर पर समृद्ध किया। आज आवश्यकता इस बात की है कि हिंदी पत्रकारिता इन परंपराओं से प्रेरणा लेकर लोकतांत्रिक मूल्यों, सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक संवेदनशीलता को बनाए रखे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अग्रवाल, रामविलास. हिंदी पत्रकारिता का इतिहास। इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
2. द्विवेदी, हजारीप्रसाद. हिंदी साहित्य की भूमिका। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
3. शर्मा, रामविलास. प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ। नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
4. चतुर्वेदी, माखनलाल. पत्रकारिता और राष्ट्रीय चेतना। भोपाल: साहित्य भवन।
5. विद्यार्थी, गणेश शंकर. प्रताप के संपादकीय। कानपुर: प्रताप प्रकाशन।
6. प्रेमचंद. साहित्य का उद्देश्य। नई दिल्ली: हंस प्रकाशन।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

7. वर्मा, महादेवी. श्रृंखला की कड़ियाँ। इलाहाबाद: लोकभारती।

8. नगेन्द्र. हिंदी साहित्य का इतिहास। नई दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस।

9. मिश्र, विद्यानिवास. हिंदी पत्रकारिता : विविध आयाम। नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ।

10. सिंह, नामवर. छायावाद। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

11. शर्मा, रामविलास. निराला की साहित्य साधना। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

12. पंत, सुमित्रानंदन. आधुनिक हिंदी साहित्य और पत्रकारिता। प्रयाग: हिंदी साहित्य सम्मेलन।

13. अवस्थी, अम्बिका प्रसाद. भारतीय पत्रकारिता का इतिहास। लखनऊ: विश्वविद्यालय प्रकाशन।

14. शुक्ल, रामचंद्र. हिंदी साहित्य का इतिहास। वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा।

15. त्रिपाठी, कृष्णदेव. हिंदी पत्रकारिता के बदलते आयाम। नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।

16. जैन, महेंद्र कुमार. प्रगतिवाद और हिंदी पत्रकारिता। जयपुर: पंचशील प्रकाशन।

17. पचौरी, सुधीश. मीडिया विमर्श। नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।

18. सिंह, बच्चन. आधुनिक हिंदी आलोचना के बीज शब्द। नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन।

19. गुप्त, गणपतिचंद्र. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास। आगरा: लोकभारती।

20. यादव, राजेंद्र. हंस और हिंदी पत्रकारिता। नई दिल्ली: अक्षर प्रकाशन।